5. निम्नलिखित अवतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। 5×2=10

(क) ''हाँ, तू अब ठीक कह रहा है। भुवनमोहिनी का साक्षात्कार पाकर भी तू भटकता फिर रहा है। पागल! देख रे, तेरे शास्त्र तुझे धोखा देते हैं। जो तेरे भीतर सत्य है, उसे दबाने को कहते हैं; जो तेरे भीतर मोहन है, उसे भुलाने को कहते हैं; जिसे तू पूजता है, उसे छोड़ने को कहते हैं। मायाविनी है यह मायाविनी, तू इसके जाल में न फँस।''

(ख) ''कौन है जो आज आर्यावर्त का दस्युओं के दंष्टाजाल से उद्धार करेगा? आज स्कन्द के अवतार समुद्रगुप्त नहीं हैं, जिनके धनुष-टंकार ने यौधेयों का दर्पदलन किया था, म्लेच्छो का मानमर्दन किया था, मन्दिरों और मठों के विध्वंसकों का प्राण-हरण किया था। आज नृसिंह-पराक्रम चन्द्रगुप्त नहीं हैं, जिन्होंने चारों समुद्रों को अपने सुरभित यश से सुगन्धमय बना दिया था, जिनके हुंकार मात्र से प्रत्यन्त सामन्त सिर झुकाने को बाध्य हुए थे, जो विद्या और कला के सर्वस्थ थे, जो स्त्रियों और बालकों के अभयदाता थे, जो देवमन्दिरों और विहारों के आश्रम स्थल थे।''

इकाई - तीन

6. 'गोदान' को महाकाव्यात्मक उपन्यास की श्रेणी में रखना कहाँ तक उचित है? विश्लेषण कीजिए। 10

7. औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से 'मैला आंचल' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए। 10

इकाई - चार

8. 'वाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के आधार पर सिद्ध कीजिए कि निपुणिका की नारी-मुक्ति की आकाक्षा से आपूरित है। 10

9. कहानी के तत्वों के आधार पर 'परदा' कहानी की समीक्षा कीजिए। 10

A **(Printed Pages 4)**

Roll No._____

AS-2166

एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

हिन्दी

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

(हिन्दी कथा साहित्य)

समय : तीन घण्टे पूर्णांक : 70

For Back paper/Improvement/ Exempted condiate(s) the maximum marks will be 70.

निर्देश : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष **चार** इकाईयों में से प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :3×10=30

(क) 'मैला आंचल' में 'बावनदास' की चरित्रगत विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'वाणभट्ट की आत्मकथा' में 'आत्मकथा' शब्द की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'गोदान' में निहित प्रमुख समस्या पर विचार कीजिए।

(घ) 'दोपहर का भोजन' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(ङ) ''त्रिशंकु' पीढ़ियों के अन्तर्विरोध को रेखांकित करती हुई स्त्री मन की व्यथा कथा है।' संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

(च) 'ईदगाह' कहानी के पतिपाद्प पर प्रकाश डालिए।

(छ) 'पुरस्कार' कहानी की मधूलिका की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

(ज) 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के प्रमुख पुरूष पात्रों का उल्लेख कीजिए।

(झ) 'मैला आंचल' उपन्यास में आंचलिक तत्त्वों का परिचय दीजिए।

(ञ) उषा प्रियंवदा की कहानी कला के वैशिष्ट्य पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित अवतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिएः5×2=10

(क) मन पर जितना ही गहरा आघात होता है उसकी प्रतिक्रिया भी उतनी ही गहरी होती हे। इस अपकीर्ति और कलंक ने गोबर के अन्तराल को मथकर वह रत्न निकाल लिया, जो अभी तक छिपा पड़ा था। आज पहली बार उसे अपने दायित्व का ज्ञान हुआ और उसके साथ ही संकल्प भी। अब तक वह कम से कम काम करता और ज्यादा से ज्यादा खाना अपना हक समझता था।

(ख) यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखों-लाख इंसानों की जिंदगी के सुनहरे सपनों को बटोरकर, अधूरे अरमानों को बटोरकर, यहाँ के प्राणी के जीवकोष में भर देने की कल्पना मैने की थी। मैने कल्पना की थी, हजारों स्वस्थ इंसान हिमालय की कंदराओं में, त्रिवेणी के संगम पर, अरूण तिमुर और सुणकोशी के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वततोड़ परिश्रम कर रहे हैं। लाखों एकड़ बंध्या धरती, कोशी-कवलि, मरी हुई मिट्टी शस्य श्यामला हो उठेगी।

3. निम्नलिखित अवतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।5×2=10

(क) हमारे नाम बड़े हैं पर दर्शन थोड़े। गरीबों में अगर ईर्ष्या या वैर है, तो स्वार्थ के लिए या पेट के लिए। ऐसी ईर्ष्या और वैर को मैं क्षम्य समझता हूँ। हमारे मुँह की रोटी कोई छीन ले, तो उसके गले में उँगली डालकर निकालना

हमारा धर्म हो जाता है।अगर हम छोड़ दें, तो देवता हैं। बड़े आदमियों की ईर्ष्या और वैर केवल आनन्द के लिए है।

(ख) सोने के अनाज से भरे हुए, धरती के गुप्त भंडार का उद्घाटन करने वाले पर धरती माता का कोप होना स्वाभाविक है। यही कारण है। यही कारण है कि आज जमीन के मालिकों ने, जमीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका किसी किस्म का हक नहीं जमने दिया है। जिस जमीन पर उनके झोपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं। हल में जुता हुआ बैल दिन भर खेत चास करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाए? यह कैसी बात है?

इकाई - दो

4. निम्नलिखित अवतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिएः 5×2=10

(क) स्नेह बड़ी दारूण वस्तु है, ममता बड़ी प्रचण्ड शक्ति हैः पिता के थके जीवन में भी एक और उपसर्ग आ जुटा और फिर भी वे अक्लान्त चित्त से मुझे संभालते रहे। होम-वेदिका से उठकर जब वे अध्यापन के कुशासन पर बैठते, तो मेरा धूलि-धूसर कलेवर प्रायः उसकी गोद में होता। मैने उनसे जितना स्नेह पाया उतनी विद्या नहीं पाई।

(ख) पर मेरा भाग्य अब भी किसी अदृष्ट के कंटक में उलझा हुआ था। जो होना था, वह हो गया; और जो होना चाहिए था, वह न हुआ। इसके बाद मुझे एक ऐसी घटना लिखनी है, जिसे लिखते समय मुझे आज भी भय और आशंका से कांप उठना पड़ता है। मैं जिस बात से बचना चाहता था, उसी से टकराना पड़ा। भाग्य को कौन बदल सकता है?